

Volume - 7, Number - 75

A Communication Research Journal

mass

media

**Our Society, Our Research**

**June-2018**

Speech

A New TRP Philosophy

Research

Sir Syed's Idea of Science Journalism

Study

Entertainment as News Media Content

Analysis

Whatsapp Dominated Other Mediums of  
Communication in Karnataka

Media News

Cobrapost: Sting Claims Media Houses Open to 'Paid  
Hindutva Content', Firms Call it Misleading

# mass media

## 75

Editor  
**Anil Chamadia**

Editor (Language)  
**Jaspal Singh Sidhu**

Consulting Editor  
**Shaheen Nazar**

Editorial Team  
**Rajneesh**  
**Purnima Oraon**

Web Incharge  
**Ravi Shanker Prasad**  
Graphics & Design  
**Pradeep Bisht**

Circulation  
**Mukul Ranjan (9953991306)**  
[subscribe.journal@gmail.com](mailto:subscribe.journal@gmail.com)

Mo. : 011-27853886  
9013270379  
E-mail  
[massmedia.editor@gmail.com](mailto:massmedia.editor@gmail.com)  
Website  
[www.massmediastudiesgroup.org.in](http://www.massmediastudiesgroup.org.in)

### Contents

#### Speech

4. A New TRP Philosophy  
*M. Venkaiah Naidu*

#### Research

6. Sir Syed's Idea of Science Journalism  
*Asad Faisal Farooqui*

#### Study

11. Entertainment as News Media Content  
*Sudhir Rinten*

#### Analysis

19. Social Media-A Villain in Social Life?  
*Mahendra Pandey*

#### Analysis

21. Whatsapp Dominated Other Mediums of Communication in Karnataka  
*Vindu Goel*

#### Archive

24. Elections and the Press  
*Modhumita Mojumdar*

#### Media News

28. Cobrapost: Sting Claims Media Houses Open to 'Paid Hindutva Content', Firms Call it Misleading  
*Krishn Kaushik*

*All the above posts are honorary. Reproduction of material without written permission is prohibited.*

## Entertainment as News Media Content

\*Sudhir Rinten

Coverage of entertainment news is very high in India. Prime time trends of past nine years show that entertainment carries a very prompt position with an average of 11.04 per cent coverage in overall prime time coverage. (See Figure)

According to CMS Media Lab reports, coverage of different news broadcasters between 2005-2013 in prime time comprised a large chunk of entertainment news. The average percentage of the different channels in regards to prime time coverage given to entertainment news is as follows: Aaj Tak (17.27%), Zee News (8.89%), Star News (17.73%) and Sahara Samay (7.75%).

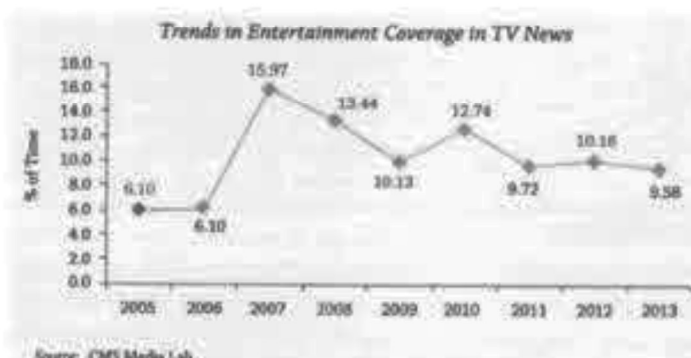
One can say that in contrary to popular perception, this trend was not only reflected by Hindi news broadcasters, but also by English news broadcasters. The average of English news channels

like CNN IBN and NDTV 24x7 was 15.90 per cent and 8.23 per cent, respectively, between the years 2008-2013. The year 2007 seems to have witnessed high levels of entertainment coverage during prime time cutting across news channels. ABP News (formerly known Star News) topped the chart with 32.03 per cent coverage of entertainment during prime time. Aaj Tak came in second with 23.43 per cent coverage. (See the table)

Apart from this prime time coverage, many news channels have their own entertainment shows, which are broadcasted in different time slots. Programmes like

Scandal (Aaj Tak, every Saturday at 20:00), Movie Masala (Aaj Tak at 17:30), Love Story (ABP News), Chugali Chachi, Sas Bahu aur Sajish (ABP News), Raat Baaki (NDTV),

audience. Audiences are willing to peep into the lives and secrets of their celebrities on television. This satisfies the hunger of voyeurism and fandom.



Night out (NDTV India), Bole Toh Bollywood, Mian, Biwi Aur TV, House arrest and Zee Multiplex (Zee TV), Saas Bahu Aur Betiyaan, Khabar Filmy Hai, and Sshhh (STAR) are some examples of the same. The presence of such shows necessitated the need for an entertainment editor whose task was to requisite entertainment news coverage.

Indian news channels often reflect their voyeuristic face in coverage of different stories of entertainment and crime. The voyeurism is evident and reinforced repeatedly to spur viewership. This approach indeed affects viewership of the programme in an assertive manner. Coverage of the lives of celebrities, their affairs, fights, tours, etc., gives immense pleasure to the contemporary television

While satisfying the hunger of voyeurism and fandom to the audiences, channels are presenting programmes like *Love Story* (ABP News) that provides very personal information like affairs, gossips and visits made at different places; the gossips are being covered to saturate voyeurism. Programmes like this affect news value at a large. This may be considered as unethical but it affects viewership in a very positive manner much to the delight of media organisations.

It is the duty of media to keep the citizenry informed of the state of governance, which mostly puts it at odds with the establishment. A media that is meant to expose the lapses in government and in public life cannot obviously be regulated by the government-it would lack credibility. It is a fundamental



जुलाई-सितंबर 2018  
ISSN: 2321-0443  
UGC Journal No. 41285  
ई-संस्करण सहित

# ज्ञान गरिमा

## अंक : 59

# सिंधु



जनसंचार  
विशेषांक



वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग  
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार  
Commission for Scientific and Technical Terminology  
Ministry of Human Resource Development  
(Department of Higher Education)  
Government of India

# ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

जनसंचार विशेषांक

अंक - 59

(जुलाई-सितंबर 2018)



सत्यमेव जयते

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(उच्चतर शिक्षा विभाग)

भारत सरकार

COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)

GOVERNMENT OF INDIA

# परामर्श एवं संपादन समिति

## प्रधान संपादक

प्रोफेसर अवनीश कुमार, अध्यक्ष

## संपादक

डॉ. अशोक सेलवटकर, सहायक निदेशक

एवं

श्रीमती चक्रप्रम बिनोदिनी देवी

सहायक वैज्ञानिक अधिकारी (पत्रकारिता)

## प्रकाशन-मुद्रण व्यवस्था

श्री शिव कुमार चौधरी

सहायक निदेशक

## संपादन समिति

डॉ. महावीर सिंह

माध्यम विशेषज्ञ

पूर्व निदेशक, दूरदर्शन

भोपाल, मध्य प्रदेश

डॉ. रेणु सिंह

सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

वर्धा, महाराष्ट्र

प्रो. ए.के. ठाकुर

पूर्व कार्यकारी संपादक,

दैनिक भास्कर

श्री सुधीर कुमार रिटन

सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग

महाराजा अग्रसेन कॉलेज, नई दिल्ली

श्री विनय राय

सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग

महाराजा अग्रसेन कॉलेज, नई दिल्ली

## अनुक्रमणिका

अध्यक्ष की ओर से

संपादकीय

|    | आलेख शीर्षक   | लेखक  | पृष्ठ संख्या |
|----|---|---|--------------|
| 1  | आधुनिक संचार माध्यमों में भारतीय भाषाओं की शब्दावली का विकास                | डॉ. महावीर सिंह                                 | 1            |
| 2  | भारत में हिंदी पत्रकारिता और शब्दावली सृजन                                  | डॉ. गोपा बागची                                  | 7            |
| 3  | राजनीतिक संचार और मीडिया साक्षरता में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषा की भूमिका    | डॉ. रेणु सिंह                                   | 14           |
| 4  | खबरों का बाज़ार या बाज़ार में खबरें   | श्री सुधीर के रिंटन                             | 22           |
| 5  | सोशल मीडिया: जनांदोलनों का हथियार   | डॉ. अमिता                                       | 28           |
| 6  | समाचार पत्र और सोशल मीडिया  | डॉ. बबिता अग्रवाल                               | 35           |
| 7  | हिंदी में विज्ञान लेखन  | डॉ. दिलीप कुमार<br>प्रो. (डॉ.) सुरेश चंद्र नायक | 39           |
| 8  | हिंदी में विज्ञान पत्रकारिता  | श्री पंकज प्रसून                                | 47           |
| 9  | खुली जेलों की मीडिया और मानवाधिकार भूमिका                                   | डॉ. वर्तिका नन्दा                               | 51           |
| 10 | भारतीय मीडिया मेंस्त्री की सहभागिता: संभावनाएं एवं चुनौतियाँ                | डॉ. पूर्णिमा कुमारी                             | 57           |
| 11 | मीडिया का 'अनुकूलन कारोबार'   | डॉ. अमित कुमार विश्वास                          | 62           |
| 12 | जनमाध्यमों में जनसरोकारों के प्रश्न और उनकी हिस्सेदारी                      | श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा                       | 68           |
| 13 | हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का विकास में संदर्भ के पत्रकारिता : | सुश्री सूर्य कुमारी. पी.                        | 73           |
| 14 | हिंदी पत्रकारिता में आदिवासी सन्दर्भ  | श्री बोलचेटवार राजेश्वर सायलु                   | 79           |
|    | जनसंचार मूलभूत शब्दवाली   |   | 83           |

## खबरों का बाज़ार या बाज़ार में खबरें

- श्री सुधीर के रिंटन

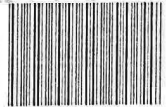
‘समाचार’ और ‘पत्रकारिता’ दोनों शब्दों के अर्थ सिर्फ एक ‘घटनाक्रम’ या उसके ‘अवलोकन व प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया’ मात्र के इर्द-गिर्द नहीं घूमते हैं, वरन एक पूरी प्रक्रिया के पूरक हैं जिसमें ‘नैतिक मूल्यों’, ‘सामाजिक सरोकारों’ और ‘नैसर्गिक न्याय’ का समावेश हो। समाचार सिर्फ हड़बड़ी में लिखा गया इतिहास नहीं, यह तत्कालीन समाज के लिए पथ प्रदर्शक, दिशा सूचक और सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक गतिविधियों का एक ऐसा दस्तावेज होता है जिससे भविष्य के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवहार को नियंत्रित, गठित और परिभाषित किया जा सकता है। परन्तु आज बाजारोन्मुख मीडिया जगत क्या ऐसा कर पा रहा है? क्या संस्थान के हितों से आगे बढ़ कर समाज की आवश्यकता को मीडिया जगत अनदेखा नहीं कर रहा? और अगर ऐसा नहीं है तो समाचारों का जो हाल आज देखने को मिलता है वैसा कैसे संभव है?

डॉ राजहंस लिखते हैं कि मौजूदा समाज में पत्रकारिता के दो प्रमुख रूप दिखाई देते हैं, पहला सरलीकृत और दूसरा भावुकतावादी। इसमें ‘सत्य की खोज’ और ‘मनुष्यता की आवाज’ तलाशने वाले तर्कों पर बाजार प्रभावी तरीके से अपना आधिपत्य स्थापित कर चुका है, जाहिर है बाजार नियंत्रित समाचार, विचार और सूचनाएँ बाज़ार के सरोकारों से ज्यादा प्रभावित होंगे और बाज़ार की जरूरतों के मुताबिक ही होंगे। वातावरण कुछ ऐसा बन रहा है कि ‘नैसर्गिक न्याय’ का भाव रखते हुए भी बाज़ार सामाजिक सरोकारों पर प्रमुखता पा जाता है और नैतिक मूल्यों की परवाह भी वहीं तक संभव है जहाँ तक बाजार के हित प्रभावित न हों।

यह बात तो निर्विवाद रूप से सत्य है कि व्यावहारिकता के घोड़े पर सवार, रोज नए तर्कों और विचारधारा से प्रभावित आज की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था में पत्रकारिता ‘मिशन’ से ‘प्रोफेशन’ की ओर बढ़ चली है। ऐसे में खबरों को बाज़ार से अलग करके नहीं देखा जा सकता, और वो भी तब, जब श्रोता, दर्शक और पाठक सिर्फ उन्हीं खबरों के मोहताज नहीं जिसे मीडिया समय-समय पर अपनी समझ और जरूरत के मुताबिक बाज़ार में परोसता रहा है। आज का पाठक या दर्शक बहुत से समाचार स्रोतों से लगातार जुड़ा है और खबरों को अलग-अलग नज़रिए से देखने समझने का प्रयास करता है। शायद यही वजह है कि ‘वैचारिक अतिरेक’ से लेकर ‘ब्लू पेंसिलिंग’, ‘पेड-न्यूज’ व ‘एडवर्टोरियल’ जैसे बाज़ार के सभी हथकंडों की आम दर्शक न सिर्फ समीक्षा करता है, बल्कि विभिन्न अवसरों और प्लेटफार्मों पर उनके बारे में बेबाक रूप से लिखता भी है। आज पाठकों / दर्शकों का एक वर्ग ऐसा भी है



ISSN 0974-9012



0974-9012

INDIAN JOURNAL OF SOCIAL ENQUIRY

Volume 9

Number 1

March 2017

# INDIAN JOURNAL OF SOCIAL ENQUIRY

ISSN 0974-9012

Volume 9 Number 1 March 2017 Rs. 200

**Communication in the Global Family**

Sunil Sondhi

**Relevance of Sant Kabir Das's Syncretism in the 21st Century**

Prabira Sethy

**Impact of Yogic Asanas at Different Altitudes**

Mukesh Agarwal

**Quest or Democratisation of Judicial System**

Subodh Kumar

**Federalism in Asia and Africa beyond India**

Niraj Kumar

**Growth and Poverty – Issues, Myth and Challenges**

Abha Mittal

**Spiritual Media for Social Change**

Sudhir K. Rinten

**Status of the Tribal Women in Assam**

Kingante Newme

**Digital Activism in India: A Study on Facebook**

Rachita Kauldhar



**MAHARAJA AGRASEN COLLEGE**

University of Delhi

Vasundhara Enclave, Delhi - 110096 Phone: 91-11-22610552, Fax: +91-11-22610562

Website: mac.du.ac.in

# Status of the Tribal Women in Assam

*Kingaule Newme*

## **Abstract**

*In the tribal society, customary laws and practices have acted as the biggest stumbling block for empowering women. Zeme Naga women in Assam do not enjoy equal political and social status with men. Women perform diverse roles in the society. Traditionally, women had four fold role to play such as a daughter, wife, housewife and a mother. From the childhood women are taught to believe that they are inferior to men in every sphere of life. Traditions and religion have a strong influence on women in guiding their lives from birth to death. The Zeme follow the Patriarchal system of family, who holds the absolute power as well the full responsibilities for protection and looking after the welfare of all dependents and the maintenance of his family. The descendant is always traced down from the male members only and the supremacy of male had been the unquestioned norm of social governance since the ancient times. After the death of the father, the head of the family is taken over by the eldest son of the family. Therefore after the first child, the birth of a son is preferred and the family with more sons are respected by the people whereas the family with many daughters are regarded to be the end of the generation of that family. This paper tries brings out the different position of a women in the Zeme Naga society.*

**Key words:** *Women position, Zeme Naga, Assam*

The Zeme are an indigenous group of people belonging to Mongoloid race and they are one of the sub-groups of the greater Naga community. They are found in Nagaland, Manipur and Assam in the district of Dima Hasao (North Cachar

INDIAN JOURNAL OF SOCIAL ENQUIRY

Volume 9

Number 1

March 2017

ISSN 0974-9012

# INDIAN JOURNAL OF SOCIAL ENQUIRY

Volume 9

Number 1

March 2017

Rs. 200

## Communication in the Global Family

Sumil Sondhi

## Relevance of Sant Kabir Das's Syncretism in the 21st Century

Prabira Sethy

## Impact of Yogic Asanas at Different Altitudes

Mukesh Agarwal

## Quest or Democratisation of Judicial System

Subodh Kumar

## Federalism in Asia and Africa beyond India

Niraj Kumar

## Growth and Poverty – Issues, Myth and Challenges

Abha Mittal

## Spiritual Media for Social Change

Sudhir K. Rinten

## Status of the Tribal Women in Assam

Kingaule Newme

## Digital Activism in India: A Study on Facebook

Rachita Kauldhar

*Self attested  
Rachita*